ये अव्यक्त इशारे

अब अपनी पुरानी नेचर व संस्कारों का परिवर्तन करो

26-11-2022

जैसे कमजोर संस्कार वा कोई अवगुण बहुतकाल से स्वरूप बन गये हैं, उसको धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हो लेकिन नेचर और नेचुरल हो गये हैं। उनको छोड़ने चाहते हो, महसूस करते हो यह नहीं होने चाहिए लेकिन समय पर फिर से न चाहते भी वह नेचर वा नेचुरल संस्कार अपना कार्य कर लेते हैं। ऐसे हर गुण, हर शक्ति निजी स्वरूप बन जाए। मेरी नेचर और नेचुरल गुण बाप समान बन जाएँ। ऐसा गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप, याद स्वरूप हो जाता है, इसको ही कहा जाता है बाप समान।

Now transform the old nature and old sanskars.

Weak sanskars or defects over a long period of time have become your form. You don't have to make effort to imbibe them, because they have become natural and part of your nature. You want to let go of them, you do realise that you shouldn't have them, but still, at any moment, that nature and those natural sanskars do their work against your conscious wish. In the same way, let every virtue and every power become your natural form. Let my nature and natural virtue become like that of the Father. In this way, become an embodiment of virtues, an embodiment of power and an embodiment of remembrance. This is known as being equal to the Father.